Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 12/August/2026 **IJRAW:** 2026; 5(10):118-122 **Accepted:** 18/September/2026

भारतीय गाँव पर वैश्विक सूचना संस्कृति का मनोसामाजिक प्रभाव

*[1]डॉ. एन.एल. मिश्र

*[1]आचार्य, मनोविज्ञान विभाग, प्रबंधन संकाय, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

सूचना क्रांति ने भारतीय ग्रामीण समुदाय की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मान्यताओं, आर्थिक गतिविधियों, शैक्षिक आकांक्षाओं तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। स्मार्टफोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा और ई–गवर्नेंस ने ग्रामीण व्यक्ति के ज्ञान, सूचना, संचार तथा अवसरों तक पहुँच के नए मार्ग खोले हैं। इसके साथ ही सूचना की विश्वसनीयता, सामाजिक तुलना, डिजिटल निर्भरता, साइबर जोखिम, पीढ़ीगत तनाव तथा सांस्कृतिक परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ भी उभरी हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सूचना क्रांति के संदर्भ में बदलते ग्रामीण समुदाय की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का भारतीय ग्रामीण मनोविज्ञान की दृष्टि से सैद्धांतिक विश्लेषण करना है। इसमें संज्ञान, अभिवृत्ति, प्रेरणा, आत्म–प्रभावकारिता, सामाजिक पहचान, सामुदायिक सम्बन्ध, निर्णय–निर्माण तथा मानसिक कल्याण को प्रमुख विश्लेषणात्मक आयामों के रूप में लिया गया है। अध्ययन यह तर्क प्रस्तुत करता है कि डिजिटल तकनीक का प्रभाव केवल तकनीकी उपलब्धता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि व्यक्ति की डिजिटल साक्षरता, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, लैंगिक सम्बन्धों, स्थानीय संस्कृति और सामुदायिक सहयोग से भी प्रभावित होता है।

मुख्य शब्द: सूचना क्रांति, भारतीय ग्रामीण मनोविज्ञान, डिजिटल विभाजन, संज्ञानात्मक परिवर्तन, सामाजिक पहचान, डिजिटल साक्षरता, ग्रामीण समुदाय, मनोवैज्ञानिक परिवर्तन।

1. प्रस्तावना

भारतीय ग्रामीण समुदाय को परंपरागत रूप से कृषि, परिवार, जाति, स्थानीय नेतृत्व, सामुदायिक सम्बन्धों, धार्मिक विश्वासों तथा पारस्परिक सहयोग से जुड़ी सामाजिक व्यवस्था के रूप में समझा जाता रहा है। ग्रामीण जीवन में व्यक्ति का व्यवहार केवल उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं से निर्धारित नहीं होता, बल्कि परिवार, समुदाय, परंपरा, स्थानीय प्रतिष्ठा और सामाजिक अपेक्षाओं से भी प्रभावित होता है।

किन्तु सूचना क्रांति ने इस सामाजिक व्यवस्था के स्वरूप में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। पहले ग्रामीण व्यक्ति की सूचना का प्रमुख आधार परिवार, गाँव के अनुभवी व्यक्ति, स्थानीय शिक्षक, कृषि विशेषज्ञ, पंचायत, रेडियो और समाचारपत्र होते थे। अब मोबाइल फोन और इंटरनेट के माध्यम से उसे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं, वैज्ञानिक ज्ञान, कृषि तकनीकों, रोजगार के अवसरों, सरकारी योजनाओं तथा विभिन्न जीवनशैलियों की जानकारी तत्काल प्राप्त हो सकती है।

इस परिवर्तन का महत्त्व केवल सूचना की मात्रा में वृद्धि तक सीमित नहीं है। सूचना के नए स्रोत ग्रामीण व्यक्ति के सोचने, दूसरों के विचारों का मूल्यांकन करने, अपने जीवन की संभावनाओं को समझने तथा निर्णय लेने के तरीकों को भी प्रभावित कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, इंटरनेट के माध्यम से कृषि सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने वाला किसान पारंपरिक अनुभव के साथ वैज्ञानिक सूचनाओं की तुलना कर सकता है। ऑनलाइन शिक्षा से जुड़ा ग्रामीण विद्यार्थी अपने गाँव से बाहर उपलब्ध शैक्षिक अवसरों को पहचान सकता है। डिजिटल माध्यमों का उपयोग करने वाली ग्रामीण महिला सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी और स्वरोजगार के अवसरों तक अधिक स्वतंत्र पहुँच प्राप्त कर सकती है।

***Corresponding Author:** डॉ. एन.एल. मिश्र

दूसरी ओर, अपुष्ट सूचनाएँ, भ्रामक संदेश, सोशल मीडिया पर दूसरों के जीवन से तुलना तथा डिजिटल संसाधनों पर असमान नियंत्रण नए मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तनाव भी उत्पन्न कर सकते हैं।

इसलिए सूचना क्रांति के युग में ग्रामीण समुदाय को समझने के लिए केवल आर्थिक विकास या तकनीकी विस्तार का अध्ययन पर्याप्त नहीं है। इसके लिए ग्रामीण व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं, सामाजिक व्यवहार, सांस्कृतिक चेतना और सामुदायिक सम्बन्धों का समन्वित अध्ययन आवश्यक है।

2. आवश्यकता

सूचना क्रांति के ग्रामीण समाज पर प्रभाव का अध्ययन कई कारणों से महत्त्वपूर्ण है। पहला, ग्रामीण समाज के भीतर परिवर्तन एक समान नहीं है। युवा और वृद्ध, महिलाएँ और पुरुष, किसान और गैर–कृषक, शिक्षित और कम शिक्षित व्यक्ति डिजिटल तकनीक का उपयोग अलग–अलग उद्देश्यों तथा परिस्थितियों में करते हैं। दूसरा, डिजिटल तकनीक तक पहुँच और उसका सार्थक उपयोग दो अलग–अलग बातें हैं। किसी परिवार में स्मार्टफोन उपलब्ध होने का अर्थ यह नहीं है कि परिवार के सभी सदस्य स्वतंत्र रूप से उसका उपयोग कर सकते हैं या डिजिटल सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। तीसरा, सूचना की उपलब्धता से ज्ञान और निर्णय की गुणवत्ता में सुधार की संभावना होती है, लेकिन यह परिवर्तन स्वतः नहीं होता। व्यक्ति की पूर्वधारणाएँ, आलोचनात्मक चिंतन, विश्वास, अनुभव तथा सूचना के स्रोत की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करने की क्षमता भी महत्त्वपूर्ण होती है। चौथा, ग्रामीण समुदाय में डिजिटल परिवर्तन का प्रभाव व्यक्तिगत स्तर से आगे बढ़कर सामाजिक सम्बन्धों, सामूहिक निर्णयों, स्थानीय नेतृत्व और सांस्कृतिक मूल्यों तक पहुँचता है।

अतः इस विषय का अध्ययन भारतीय ग्रामीण मनोविज्ञान के विकास, ग्रामीण विकास नीतियों के निर्माण और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों की प्रभावशीलता बढ़ाने में योगदान कर सकता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. सूचना क्रांति की अवधारणा और भारतीय ग्रामीण समुदाय में उसके प्रभावों का विश्लेषण करना।
2. ग्रामीण व्यक्ति की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, अभिवृत्तियों और निर्णय–निर्माण में होने वाले संभावित परिवर्तनों को समझना।
3. ग्रामीण परिवार, सामाजिक सम्बन्धों और सामुदायिक संरचना पर डिजिटल संचार के प्रभावों का विश्लेषण करना।
4. ग्रामीण युवाओं, महिलाओं, कृषकों और वृद्ध व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अनुभवों में संभावित अंतर स्पष्ट करना।

4. अध्ययन की पद्धति

यह आलेख मुख्यतः सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें ग्रामीण डिजिटल परिवर्तन से संबंधित सरकारी आँकड़ों, उपलब्ध शोध साहित्य तथा सामाजिक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की प्रमुख अवधारणाओं को आधार बनाया गया है।

इसमें सूचना क्रांति को एक स्वतंत्र तकनीकी घटना के रूप में न देखकर सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास किया गया है।

5. सूचना संस्कृति सम्प्रत्यय

सूचना क्रांति से आशय उस व्यापक परिवर्तन से है, जिसमें डिजिटल तकनीकों के माध्यम से सूचना का उत्पादन, संग्रह, प्रसारण, आदान–प्रदान और उपयोग तेजी से विस्तृत होता है। इस क्रांति के प्रमुख घटक हैं– स्मार्टफोन और मोबाइल इंटरनेट, सोशल मीडिया तथा त्वरित संदेश सेवाएँ। डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन बैंकिंग, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल पुस्तकालय, ई–गवर्नेंस तथा ऑनलाइन सरकारी सेवाएँ, कृषि सम्बन्धी डिजिटल परामर्श और बाजार सूचनाएँ, टेलीमेडिसिन तथा डिजिटल स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सूचना एवं परामर्श प्रणालियाँ।

इन तकनीकों ने स्थान और समय से संबंधित अनेक बाधाओं को कम किया है। अब ग्रामीण व्यक्ति किसी विशेषज्ञ, संस्था या ज्ञान–संसाधन तक पहुँचने के लिए हमेशा भौतिक रूप से वहाँ उपस्थित होने पर निर्भर नहीं रहता। फिर भी डिजिटल माध्यमों का उपयोग भाषा, आय, शिक्षा, नेटवर्क की गुणवत्ता, उपकरणों की उपलब्धता और सामाजिक स्वतंत्रता से प्रभावित होता है। इसलिए सूचना क्रांति को केवल तकनीकी विस्तार नहीं, बल्कि अवसरों और असमानताओं के पुनर्गठन की प्रक्रिया भी समझना चाहिए।

6. सूचना क्रांति के संदर्भ में ग्रामीण मनोविज्ञान की अवधारणा

ग्रामीण मनोविज्ञान से आशय ग्रामीण सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं, भावनाओं, अभिवृत्तियों, प्रेरणाओं, व्यवहारों और सामुदायिक सम्बन्धों के अध्ययन से है। ग्रामीण व्यक्ति के मनोविज्ञान को केवल कृषि–आधारित जीवन या परंपरागत संस्कृति के संदर्भ में नहीं समझा जा सकता। ग्रामीण समुदाय स्वयं परिवर्तनशील है। शिक्षा, नगरीकरण, प्रवासन, बाजार, संचार माध्यमों और राजनीतिक सहभागिता के साथ उसमें नए मनोवैज्ञानिक अनुभव विकसित होते हैं।

सूचना क्रांति इस परिवर्तन को और अधिक गतिशील बनाती है। इसके प्रभाव से ग्रामीण व्यक्ति एक साथ दो सामाजिक संसारों से जुड़ सकता है– एक ओर उसका स्थानीय समुदाय, परिवार और परम्परा; दूसरी ओर डिजिटल माध्यमों से उपलब्ध व्यापक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संसार। इस स्थिति में ग्रामीण व्यक्ति के

सामने अपनी पारंपरिक पहचान को बनाए रखने तथा नई संभावनाओं को अपनाने, दोनों प्रकार की चुनौतियाँ आ सकती हैं।

उदाहरण के लिए, एक ग्रामीण युवा अपने परिवार की कृषि परंपरा का सम्मान करते हुए तकनीकी शिक्षा, उद्यमिता या किसी वैकल्पिक व्यवसाय की ओर आकर्षित हो सकता है। इससे परिवार में विचारों का अंतर उत्पन्न होना आवश्यक नहीं है, लेकिन जहाँ पीढ़ियों की अपेक्षाएँ परस्पर विरोधी हों, वहाँ तनाव की संभावना बढ़ सकती है।

इस प्रकार सूचना क्रांति के युग में ग्रामीण मनोविज्ञान का अध्ययन परिवर्तन, अनुकूलन, पहचान और सामाजिक सहभागिता की प्रक्रियाओं पर केंद्रित होना चाहिए।

7. संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में परिवर्तन

संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, सीखना, स्मृति, भाषा, चिंतन, तर्क और निर्णय–निर्माण शामिल हैं। डिजिटल तकनीक इन प्रक्रियाओं को अनेक प्रकार से प्रभावित कर सकती है।

7.1. सूचना ग्रहण और प्रत्यक्षीकरणः पहले ग्रामीण व्यक्ति अनेक सामाजिक घटनाओं की जानकारी प्रत्यक्ष अनुभव, स्थानीय बातचीत और सीमित संचार माध्यमों से प्राप्त करता था। वर्तमान में वीडियो, चित्र, संदेश, समाचार और डिजिटल चर्चाओं के माध्यम से अनेक घटनाओं को देख और समझ सकता है; इससे उसके अनुभव का विस्तार संभव है। वह ऐसी कृषि तकनीकों, जीवन–शैलियों और सामाजिक परिस्थितियों से परिचित हो सकता है, जिन्हें उसने अपने गाँव में प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा है; लेकिन डिजिटल सूचना प्रत्यक्ष अनुभव के समान नहीं होती। वीडियो या चित्र के माध्यम से प्राप्त जानकारी अधूरी, सम्पादित या भ्रामक भी हो सकती है।

7.2. सीखना और स्मृतिः डिजिटल माध्यमों ने ग्रामीण समुदाय में अनौपचारिक सीखने की संभावनाएँ बढ़ाई हैं। उदाहरण के लिए– किसान कृषि विशेषज्ञों के वीडियो देखकर नई तकनीकें सीख सकता है, विद्यार्थी ऑनलाइन व्याख्यानों के माध्यम से कठिन विषयों को दोबारा समझ सकता है, ग्रामीण महिला डिजिटल प्रशिक्षण के माध्यम से स्वरोजगार सम्बन्धी कौशल विकसित कर सकती हैद्व युवा ऑनलाइन पाठ्यसामग्री के माध्यम से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं; लेकिन जानकारी को बार–बार देखना और उसे दीर्घकालिक स्मृति में व्यवस्थित करना अलग प्रक्रियाएँ हैं। प्रभावी अधिगम के लिए समझ, अभ्यास, पुनरावृत्ति, पूर्वज्ञान से सम्बन्ध और वास्तविक जीवन में प्रयोग महत्त्वपूर्ण हैं। सूचना की उपलब्धता तभी सार्थक ज्ञान में बदलती है, जब व्यक्ति उसका सक्रिय प्रसंस्करण करता है। उदाहरण के लिए, कोई किसान एक ही प्रकार की कृषि तकनीक का समर्थन करने वाले वीडियो देखकर अन्य विकल्पों की उपेक्षा कर सकता है। इसी प्रकार कोई व्यक्ति किसी सामाजिक या राजनीतिक विषय पर बिना सत्यापन के संदेश स्वीकार कर सकता है। यहाँ डिजिटल साक्षरता का महत्त्व केवल तकनीकी कौशल तक सीमित नहीं रहता। इसमें स्रोत की विश्वसनीयता, प्रमाण की गुणवत्ता, तथ्य और मत के अन्तर तथा वैकल्पिक व्याख्याओं को समझने की क्षमता भी शामिल होती है।

8. निर्णयन एवं सूचना क्रांति

निर्णय–निर्माण एक ऐसी संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति उपलब्ध विकल्पों का मूल्यांकन करता है और किसी विकल्प का चयन करता है। ग्रामीण जीवन में निर्णय अनेक क्षेत्रों से सम्बन्धित होते हैं, जैसे कृषि निवेश, फसल का चयन, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, विवाह, वित्तीय लेन–देन और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण अन्तर जानना चाहिए कि अधिक सूचना होना और बेहतर निर्णय लेना एक ही बात नहीं है। यदि किसान को बीज, उर्वरक और मौसम के सम्बन्ध में अनेक डिजिटल संदेश मिलते हैं, तो वह उपयोगी विकल्प चुन सकता है। लेकिन यदि सूचनाएँ विरोधाभासी हों और उनकी सत्यता जाँचने की क्षमता सीमित हो, तो निर्णय की गुणवत्ता कम भी हो सकती है।

9. सामाजिक पहचान और ग्रामीण आत्म–अवधारणा

आत्म–अवधारणा से आशय व्यक्ति द्वारा अपने बारे में विकसित धारणाओं से है। इसमें अपनी क्षमताओं, सामाजिक स्थिति, उपलब्धियों, भूमिकाओं और सम्भावनाओं की समझ शामिल होती है। डिजिटल माध्यम ग्रामीण व्यक्ति को ऐसे व्यक्तियों और समुदायों से परिचित कराते हैं जिनके जीवन के अवसर, आर्थिक स्थिति और सामाजिक व्यवहार उसके अपने परिवेश से भिन्न हो सकते हैं। इस सम्पर्क से व्यक्ति अपनी सम्भावनाओं का आकलन कर सकता है। ग्रामीण विद्यार्थी स्वयं को उच्च शिक्षा के योग्य समझने लग सकता है। किसान आधुनिक तकनीक अपनाने की संभावना पर विचार कर सकता है। ग्रामीण उद्यमी अपने उत्पादों को व्यापक बाजार में प्रस्तुत करने का प्रयास कर सकता है। इसके विपरीत, सोशल मीडिया पर प्रदर्शित सम्पन्नता, लोकप्रियता और उपलब्धियों की तुलना से कुछ व्यक्तियों में हीनभावना, असंतोष या अपनी सामाजिक स्थिति के प्रति असुरक्षा बढ़ सकती है। यह प्रभाव सभी व्यक्तियों में समान नहीं होगा। इसका सम्बन्ध व्यक्ति के आत्मसम्मान, सामाजिक समर्थन, आर्थिक परिस्थितियों और डिजिटल सामग्री के प्रति दृष्टिकोण से भी हो सकता है। इसलिए डिजिटल सम्पर्क को न तो स्वतः सशक्तीकरण और न ही अनिवार्य मनोवैज्ञानिक संकट के रूप में देखना उचित है।

10. ग्रामीण परिवार और पीढ़ीगत सम्बन्धों में परिवर्तन

भारतीय ग्रामीण परिवार समाजीकरण, मूल्य–संचरण, भावनात्मक समर्थन और सामाजिक नियंत्रण की महत्त्वपूर्ण इकाई रहा है। डिजिटल तकनीक पारिवारिक जीवन में कई प्रकार के परिवर्तन ला सकती है।

10.1. पारिवारिक संवाद के नए माध्यमः प्रवासी सदस्य वीडियो कॉल और संदेशों के माध्यम से अपने परिवार से

नियमित सम्पर्क बनाए रख सकते हैं। इससे भौगोलिक दूरी के बावजूद भावनात्मक सम्बन्धों को बनाए रखने में सहायता मिल सकती है।

10.2. पीढ़ीगत ज्ञान का आदान–प्रदानः युवा सदस्य डिजिटल तकनीक, ऑनलाइन भुगतान और इंटरनेट सेवाओं के उपयोग में परिवार के वृद्ध सदस्यों की सहायता कर सकते हैं। दूसरी ओर, वृद्ध व्यक्ति कृषि, स्थानीय पर्यावरण, पारिवारिक इतिहास और सामुदायिक अनुभवों से संबंधित ज्ञान नई पीढ़ी को दे सकते हैं। इस प्रकार डिजिटल परिवर्तन केवल युवा पीढ़ी द्वारा पुरानी पीढ़ी को प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया नहीं है। यह पारस्परिक सीखने का अवसर भी बन सकता है।

10.3. पारिवारिक अधिकार और स्वायत्तताः इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जानकारी युवाओं को अपने जीवन के विकल्पों के बारे में स्वतंत्र रूप से सोचने के अवसर प्रदान कर सकती है। लेकिन जब व्यक्तिगत आकांक्षाएँ पारिवारिक अपेक्षाओं से भिन्न होती हैं, तो विवाद की संभावना भी उत्पन्न हो सकती है। यहाँ परिवार के भीतर संवाद, निर्णयों में सहभागिता और विभिन्न पीढ़ियों के प्रति पारस्परिक सम्मान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

10.4. साझा उपकरण और निजी स्वतंत्रताः कई ग्रामीण परिवारों में डिजिटल उपकरणों का उपयोग साझा रूप से किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक सदस्य की सूचना तक पहुँच, निजी संवाद और स्वतंत्र निर्णय की क्षमता समान नहीं होती। इसलिए परिवार में इंटरनेट की उपलब्धता का अध्ययन करते समय यह भी देखना चाहिए कि उपकरण का स्वामित्व किसके पास है, उपयोग पर नियंत्रण किसका है और परिवार के विभिन्न सदस्य इसका उपयोग किन उद्देश्यों के लिए कर पाते हैं।

11. ग्रामीण युवाओं का मनोविज्ञान और डिजिटल संस्कृति

ग्रामीण युवाओं के लिए डिजिटल माध्यम शिक्षा, रोजगार, सामाजिक संपर्क, मनोरंजन और आत्म–अभिव्यक्ति के महत्त्वपूर्ण साधन बन सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं और उच्च शिक्षा की सामग्री तक पहुँच, व्यावसायिक कौशल और रोजगार सम्बन्धी जानकारी, स्थानीय उत्पादों तथा सेवाओं के लिए व्यापक बाजार की खोज, समान रुचियों वाले लोगों के साथ संपर्क, सामाजिक और नागरिक मुद्दों के बारे में जानकारी, रचनात्मक गतिविधियों और उद्यमिता के अवसर। दूसरों की उपलब्धियों से लगातार तुलना, ऑनलाइन अपमान, उत्पीड़न या साइबर बुलिंग, भ्रामक सूचनाओं के कारण गलत धारणाएँ, अत्यधिक या अनियंत्रित उपयोग से दैनिक कार्यों में व्यवधान, ऑनलाइन लोकप्रियता को आत्म–मूल्य का आधार बना लेना, शिक्षा, रोजगार और वास्तविक अवसरों के बीच अपेक्षा तथा उपलब्धि का अंतर।

12. कृत्रिम सूचना एवं नवनिर्मित मनःस्थिति

भारतीय ग्रामीण समुदाय में कृषि केवल आजीविका का साधन नहीं है। यह अनुभव, पारिवारिक परम्परा, प्रकृति के साथ सम्बन्ध, जोखिम की समझ और सामाजिक प्रतिष्ठा से भी जुड़ी होती है। डिजिटल तकनीक कृषि सम्बन्धी निर्णयों में उपयोगी सूचना उपलब्ध करा सकती है। उदाहरण के लिए– मौसम का पूर्वानुमान, फसल रोगों और कीटों की पहचान सम्बन्धी जानकारी, कृषि विशेषज्ञों का परामर्श, बाजार भाव और सम्भावित खरीदारों की जानकारी, सरकारी योजनाओं तथा कृषि सहायता से संबंधित सूचनाएँ, सिंचाई और कृषि उपकरणों के उपयोग की जानकारी। फिर भी डिजिटल कृषि सूचना का उपयोग अनेक शर्तों पर निर्भर करता है। सूचना स्थानीय मिट्टी, जलवायु और फसल के अनुकूल होनी चाहिए। किसान को उसकी विश्वसनीयता परखने का अवसर मिलना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञ से परामर्श उपलब्ध होना चाहिए। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यहाँ जोखिम की धारणा, नवीनता के प्रति अभिवृत्ति, परिवर्तन के प्रति खुलापन, आत्म–प्रभावकारिता और अनुभव–आधारित विश्वास महत्त्वपूर्ण हैं।

कुछ किसान नई तकनीक शीघ्र अपनाने के इच्छुक हो सकते हैं, जबकि दूसरे किसान पहले उसके परिणामों का प्रत्यक्ष प्रमाण देखना चाहेंगे। यह अंतर अपने आप में अविवेक या पिछड़ेपन का प्रमाण नहीं है। कृषि में निवेश से जुड़ा जोखिम, आर्थिक सुरक्षा और पूर्व अनुभव भी निर्णय को प्रभावित करते हैं। इसलिए डिजिटल कृषि कार्यक्रमों की सफलता का मूल्यांकन केवल डाउनलोड या पंजीकरण की संख्या से नहीं, बल्कि उपयोग की निरंतरता, सूचना की उपयोगिता, निर्णयों की गुणवत्ता और किसानों के वास्तविक अनुभवों से भी किया जाना चाहिए।

13. सांस्कृतिक मूल्य एवं सूचना क्रांति

भारतीय ग्रामीण समुदाय की सांस्कृतिक संरचना में परिवार, सामूहिकता, पारस्परिक सहयोग, परम्परा, धार्मिक विश्वास, स्थानीय भाषा और सामुदायिक पहचान की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। सूचना क्रांति ने इन सांस्कृतिक तत्वों के साथ नए प्रकार के सम्बन्ध स्थापित किए हैं।

13.1. परम्परा और आधुनिकता का अंतःसम्बन्धः डिजिटल माध्यमों के द्वारा ग्रामीण व्यक्ति आधुनिक शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नए व्यवसायों और विभिन्न जीवन–शैलियों से परिचित होता है। इससे परम्परागत मान्यताओं का पुनर्मूल्यांकन हो सकता है। लेकिन आधुनिकता को परंपरा के पूर्ण निषेध के रूप में समझना उचित नहीं है। ग्रामीण व्यक्ति नई तकनीक अपनाते हुए भी अपनी स्थानीय सांस्कृतिक पहचान बनाए रख सकता है। उदाहरण के लिए, कोई परिवार धार्मिक अनुष्ठानों और पारम्परिक त्योहारों का पालन करते हुए डिजिटल माध्यम से शिक्षा, व्यापार और बैंकिंग सम्बन्धी गतिविधियाँ भी संचालित कर सकता है। इस प्रकार ग्रामीण संस्कृति में निरन्तरता और परिवर्तन दोनों साथ–साथ चल सकते हैं।

13.2. सामुदायिक सहयोग और डिजिटल नेटवर्कः डिजिटल समूहों के माध्यम से ग्रामीण लोग कृषि सम्बन्धी जानकारी, रोजगार के अवसर, सामाजिक कार्यक्रमों और

स्थानीय समस्याओं पर विचार–विमर्श कर सकते हैं। इन नेटवर्कों से सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा मिल सकता है। दूसरी ओर, यदि डिजिटल समूहों में अफवाहें, व्यक्तिगत आरोप या सामाजिक विभाजन बढ़ते हैं, तो पारस्परिक विश्वास कमजोर होने की संभावना भी होती है। इसलिए डिजिटल संचार का सामुदायिक प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उसका उपयोग सहयोग, संवाद और समस्या–समाधान के लिए किया जाता है या विवाद और ध्रुवीकरण के लिए।

14. प्रसार–नवाचार सिद्धान्त

एवरेट रोजर्स का नवाचार प्रसार सिद्धान्त बताता है कि किसी नवीन विचार या तकनीक को समाज में अपनाने की प्रक्रिया सामाजिक सम्पर्क, अनुभव, संचार और तकनीक के प्रति लोगों की धारणाओं से प्रभावित होती है। ग्रामीण समुदाय में डिजिटल कृषि तकनीक, ऑनलाइन शिक्षा या डिजिटल भुगतान का प्रसार स्थानीय शिक्षक, प्रगतिशील किसान, स्वयं सहायता समूह, पंचायत प्रतिनिधि और अन्य विश्वसनीय व्यक्तियों के माध्यम से हो सकता है। इस सिद्धान्त के अनुसार नवीनता का लाभ, उपयोग में आसानी, स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूलता और उसके परिणामों को देखने का अवसर महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं।

15. निष्कर्ष

सूचना क्रांति के युग में भारतीय ग्रामीण समुदाय एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन से गुजर रहा है। डिजिटल तकनीक ने सूचना, शिक्षा, संचार, वित्तीय सेवाओं, कृषि परामर्श और रोजगार सम्बन्धी अवसरों तक पहुँच के नए मार्ग खोले हैं। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण व्यक्ति की आकांक्षाओं, ज्ञान–संसाधनों और सामाजिक सम्पर्कों का विस्तार हो सकता है। किन्तु तकनीकी विस्तार अपने आप में मनोवैज्ञानिक सशक्तीकरण की गारंटी नहीं है। डिजिटल संसाधनों से वास्तविक लाभ प्राप्त करने के लिए डिजिटल साक्षरता, आलोचनात्मक चिंतन, आत्म–प्रभावकारिता, सामाजिक समर्थन और उपकरणों पर स्वतंत्र नियंत्रण आवश्यक हैं। ग्रामीण समुदाय में सूचना क्रांति का प्रभाव व्यक्ति की आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार भिन्न हो सकता है। इसलिए ग्रामीण समाज को एक समान समूह के रूप में देखने के बजाय उसके भीतर मौजूद विविधताओं का अध्ययन करना चाहिए। भारतीय ग्रामीण मनोविज्ञान के लिए इस विषय का विशेष महत्त्व है, क्योंकि यह तकनीकी परिवर्तन और मानवीय व्यवहार के बीच सम्बन्धों को स्थानीय सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ में समझने का अवसर प्रदान करता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास की वास्तविक सफलता केवल इस बात में नहीं है कि ग्रामीण व्यक्ति कितनी सूचना प्राप्त करता है, बल्कि इसमें है कि वह उस सूचना को कितनी अच्छी तरह समझता है, उसकी विश्वसनीयता का मूल्यांकन करता है और उसका उपयोग अपने जीवन, परिवार तथा समुदाय के हित में कर पाता है।

संदर्भ सूची

1. Bandura A. *Social Foundations of Thought and Action: A Social Cognitive Theory*. Prentice-Hall; 1986.
2. Bandura A. *Self-Efficacy: The Exercise of Control*. W.H. Freeman; 1997.
3. Davis FD. Perceived usefulness, perceived ease of use and user acceptance of information technology. *MIS Quarterly*. 1989;13(3):319–340.
4. International Telecommunication Union. *Global Connectivity Report 2025*. 2025.
5. Impact of social media on the psychological well-being of rural Youth - A systematic literature review and bibliometric analysis. *Entertainment Computing*. 2025;55:101012.
6. Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India. *Comprehensive Modular Survey: Telecom, 2025*. 2025.
7. Rogers EM. *Diffusion of Innovations*. 5th ed. 2003.
8. Tajfel H, Turner JC. An integrative theory of intergroup conflict. In: Austin WG, Worchel S, editors. *The Social Psychology of Intergroup Relations*. pp. 33–47. 1979.
9. Telecom Regulatory Authority of India. *The Indian Telecom Services Yearly Performance Indicators for the Year 2024–25*. 2025.
10. Venkatesh V, Morris MG, Davis GB, Davis FD. User acceptance of information technology: Toward a unified view. *MIS Quarterly*. 2003;27(3):425–478.